ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP. NO. 119
ISSN NO.-2347-2944
Vol.-6, Issues-7 YEAR- 2016 (Extra)

पर्यावरण संरक्षण में युवाओं की भूमिका

रेनू पाण्डेय
असिस्टेन्ट प्रोफेसर–बी0एड0 विभाग, ज्योत्सना बी0एड0 कॉलेज ऑफ एजूकेशन, सीधी (म0प्र0) भारत

सारांश : ***पर्यावरण संरक्षण में युवाओं की भूमिका बहुत ही अहम् है। आज हमारे देश की युवा शक्ति बहुत मजबूत हो गयी है। युवा शक्ति एक ऐसी शक्ति है जो हवा के रूख को भी बदल सकती है। यदि हमारे देश का युवा अपने कंधों पर किसी भी कार्य को उठाता है तो वह बहुत ही अच्छे ढंग से उस कार्य को पूरा करने की शक्ति रखता है। हमारा युवा चाहे को पर्यावरण संरक्षण की गति को बढ़ा सकता है किन्तु यह कार्य केवल युवाओं के सोचने से ही नहीं अपितु जब तक सभी वर्ग के लोग जागृत नहीं होंगे तब तक वह कार्य सम्पन्न नहीं हो सकता। इसके साथ–साथ हमें इस बात का भी ध्यान देना होगा कि क्या ऐसा किया जाय जिससे पर्यावरण स्वच्छ बना रहे। इसके लिये हमें अनेक बातों की तरफ ध्यान केन्द्रित करना होगा।***

1. पौध–रोपण– प्रकृति की सुन्दरता और पर्यावरण की स्वच्छता को बचाये रखने के लिये पौध रोपण एक बहुत ही अहम् कदम है। पौधा कुछ समय उपरान्त एक वृक्ष का रूप ले लेता है जिससे हमें छाया प्राप्त होने के साथ–साथ शुद्ध ऑक्सीजन भी प्राप्त होती है। हमारे देश के युवाओं को इस प्रकार के कार्यक्रमों में बढ़–चढ़कर हिस्सा लेना चाहिए और इस प्रकार के ऐसे कई कार्यक्रमों का आयोजन करना चाहिए जिससे युवाओं के अन्दर एक नये जोश का संचार हो सके।

2. चित्रकारी– पर्यावरण संरक्षण को लोगों तक पहुँचाने के लिये स्कूलों और कालेजों में समय–समय पर पेन्टिंग प्रतियोगिता आयोजित करायी जाती है और युवा वर्ग उस आयोजन में बढ़–चढ़कर हिस्सा लें और सरकार को चाहिए कि ऐसे कार्यक्रमों को बढ़ावा दें और इस कार्यक्रम के द्वारा लोगों में जागरूकता का आह्वान किया जा सके।

3. प्लास्टिक का बहिष्कार– प्लास्टिक और पॉलीथीन को पूर्ण रूप से बहिष्कृत करने की आवश्यकता है, क्योंकि प्लास्टिक के उपयोग से तरह–तरह की बीमारियाँ फैलती हैं और उसका बुरा प्रभाव जन–जीवन तथा पशुओं पर भी पड़ता है और इसका खासा प्रभाव पर्यावरण पर भी पड़ता है। अतः युवा वर्ग को चाहिए कि प्लास्टिक का बहिष्कार पूर्णरूपेण कर दें तथा अन्य लोगों को भी जागरूक करना चाहिए।

4. वनों की अंधाधुंध कटाई पर रोक– मौजूदा समय में आबादी बढ़ने से शहरों और गाँवों का विस्तार हो रहा है जिससे खेतों के कम होने के साथ–साथ वृक्षों पर भी बुरा असर पड़ रहा है। वृक्षों की अंधाधुंध कटाई हो रही है और उसकी जगह पर दूसरा वृक्ष नहीं उगाया जा रहा है। देश के युवा इस ओर भी अपना योगदान कर सकते हैं। सभी वर्गों को चाहिए कि वृक्ष की कटाई होने से बचाया जाय और जागरूकता कार्यक्रम लाया जाय, जिससे वृक्षों की अहमियत के बारे में सभी को पता चल सके और इस विनाशकारी कार्य को होने से बचाया जा सके।

निष्कर्ष– पर्यावरण सुरक्षा और उसमें सन्तुलन हमेशा बना रहे इसके लिये हमें जागरूक और सचेत रहना होगा। प्रत्येक प्रकार के हॉनिकारक प्रदूषण जैसे जल, वायु, ध्वनि इन सब खतरनाक प्रदूषण से बचने के लिये अगर हम धीरे–धीरे कोई उपाय करें, तो हमारी पृथ्वी की सुन्दरता जो कि पर्यावरण है उसे बचा सकते हैं और अपने जीवन को भी स्वस्थ और स्वच्छ रूप में प्राप्त कर सकते हैं। पर्यावरण संरक्षण विश्व में प्रत्येक मनुष्य के लिये अनिवार्य रूप से घोषित करना चाहिए। पर्यावरण है तो हमारा जीवन है।

*****

ASVS Society Reg. No. 561/2013-14